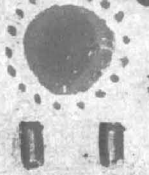


॥१॥ उं नमः ॥ दिवं श्रीं उं नमः ॥ तस्मिन् प्रारंभे ति यद्यं सुश्रुं कं सात्त्विकं प्रो मं अं संतानं आद्यु प्रवृत्ति तगव्यां तगवति
 एव मर्यादां प्रकृत्या उं ह ॥ एणि प्रवृत्ति सुयगां गनं वीजं प्रकृतस्मिन् विवृत्तं वा कालिका रनं अं विना गवतं उं उं डरी कना मत्र
 धर्य न पुं डरी कं स्वतः प्रकृतं करी उं मां कृ सिं जिं हां तणं कारणि एव उं नाम की धरा तस्म कणत ह न उं एं वा कालिका री उं म
 ष्ट्या ज आ म लिक ही सिं हां त अ म प च त्वा ती र्थ क रिक ह्य उं स ज हां त जि म हं ति म क हं उं ना म ण सं ता व ना म इ वि ष ड सं ता वी
 इ उं पुं क रणा न उं द र्शा ना पु र व रि णा मि या ण जि म का र् इ ए क पुं क र णा क म ल स हि त वा व डी त श ता क ह वी ॥ ब्र ह्म उं द ग ण घ णु पा णी
 उं जि हा त ब्र ह्म उं द का ॥ ब्र ह्म स या ण जि हा य ण उं का र म उं श त ब्र ह्म क र् हि मा ब्र ह्म पु र का ता ण घ णु उं सं पू र्ण उं द का दि क र्ण त ह हा ण ला ध

॥१॥ सुश्रुं म अं संतानं तगवता एव मरका
 मां प्रसात्ता सजहाण मपा पुं क र णा मि या
 द रि स णि क्ता ॥ अ ति रू वा प डि रू वा ती से
 त हिं ब ह त्प उं म व र पुं न री आ बु ड् आ ॥



यां ह व लु वा म ही प णा सं व्र ष य णा त स र णा अ य
 ब्र ह्म र क ला ल ह हा पुं म रि णि णा पा रा दि रू ॥
 णा पुं क र णा ण त ह न त्वा द रा द रा सा त हि
 अ पु पु व णि या उ मि या रु द ना व स म ता गं

* ब्रह्म उं द ग
 ब्रह्म स या ३२

पुं क र णा न उं अ र्थ जि णि त ल ह हा ज ह वी ना जि त ह वी परि ण मि पुं ड रि णि क ण अ त क म ल स हि त घ णां अ त प द्य स हि श णा सा ती या ण
 निर्म ल ज ल ना पू र्ण घ णा ध की द रि स णा या ण घ णा ला क न इ द ष वा या ग ॥ अ ति रू वा ण स घ न इ रू प उं द सं व र्ण वा का ग ज स हि ष म्पा
 दि क ना ति णि का र णि अ ति रू पा अ डि रू वा ण स्व च ना व ष की स घ न्ना रू प स घ नी पुं क र णा म हा प्र ति वि ब्वा उं श ता णि का र णि प्र ति रू
 पा ती स ण पुं क र णा णा त ह पुं क र णा न इ वि ष डं त उं २ ॥ ति हां ति हां पुं क र णा न इ वि ष डं दा स ण ए क ए क प्रा द श न इ वि ष डं त हि
 २ ॥ त णि त णि प्रा द शि ए त न इ त प्रा द श न त्वा जि णि प्रा द श इ क म ल न म ॥ अ र्थ वा त उं र दा श र त हि श ण त्री णि प ह न उ ए क न अ र्थ
 उं श ण णि क म ल नु प्र च उ र ण उं ज णा व दान इ अ र्थि क द्या ॥ ब्र ह्म त उं णा प उं म ण क म ल व र ण प्र ध न पुं ड रि या ण पुं ड रि का अ त श
 प उं क म ल ना बु र्द या णा वा लां आ णु पु व ण वि शि ष्ट र व ना इं क र ॥ णि या ण र द्या उं श उ मि या ण पं क ज ल ष की उ प रि व र्त्त इ उं श रु द ना ण